खुरपका एवं मुँहपका रोग: दुष्प्रभाव एवं रोकथाम

परियोजना निदेशालय खुरपका एवं मुँहपका रोग, मुक्तेश्वर

परिचय

खुरपका एवं मुँहपका रोग (एफ०एम०डी०) जुगाली करने वाले पशुओं में होने वाला एक अत्याधिक संक्रामक रोग है। इस रोग से गाय, भैस तथा शुकर सबसे अधिक प्रभावति होते है। अन्य लघु रोमंथि जैसे भेड़ तथा बकरियों में भी इस रोग के लक्षण दिखाई देते है। भारत में दुग्ध, मांस एवं कृषि कार्य के लिए पशुओं की मुख्य भुमिका है। एफ०एम०डी० पूरे भारत में एक स्थानिय रोग है। यह रोग एक अत्यंत सूक्ष्म विषाणु द्वारा होता है जिसके भारत मे ंतीन मुख्य प्रकार पाए जाते है, जिनको सिरोटाइप 'ओ'; 'ए' तथा एशिय–१ के नामों से जाना जाता है। इनमें से सिरोटाइप 'ओ' सर्वाधिक रूप से पाया जाता है। यह रोग सिर्फ भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा है है। अतः इसलिए इसकी रोकथाम करना वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रोग के दुष्प्रभाव

- पशुधन उत्पादन में बीमारी के दौरान भारी कमी आना।
- पशु फिर कभी अधिकतम उत्पादन हासिल नहीं कर पाते।
- पशु उत्पादों के निर्यात तथा आयत पर प्रतिकूल प्रभाव जिससे पशुधन उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता।
- जुगाली ना कर पाने से वजन कम होना
- शावकों में अधिक मृत्यु दर
- अत्याधिक तेजी से फैलने से कुछ समय में एक झुंड या पूरे गाँव के अधिकतर पशुओं को संक्रामित कर देना

संक्रमण के माध्यम

संक्रमण का मुख्य मार्ग श्वसन तंत्र है हांलाकि संक्रमित भोजन, पानी तथा मनुष्यों द्वारा भी यह रोग फैल सकता है। मुख्यतः संक्रमित रोगी पशुओं के संपर्क में आने जैसे साथ चरने या एक ही व्यक्ति द्वारा दुध दुहने से स्वस्थ्य पशु संक्रमित हो सकते है।

संक्रमित पशुओं में रोग के लक्षण आने से दो दिन पहले से ही विषाणु प्रसार प्रारम्भ कर देते है जिसमें बचाव का अवसर भी प्राप्त नहीं होता। इतना हि नही कुछ–एक पशुओं में लक्षण समाप्त होने के पश्चात् भी संक्रमित रहते है तथा विषाणु का प्रसार करते रहते है जिससे बचे हुए पशु भी संक्रमित हो जाते है। सभी पशुओं में से शकुरो को सबसे ज्यादा विषाणु प्रसार का माध्यम माना गया है।

मुख्य लक्षण

यह रोग परिपक्व पशुओं में घातक नहीं होता परंतु इस रोग के कारण शावकों में २० प्रतिशत तक मृत्यु देखी जा सकती है।

इस रोग की प्रमुख विशेषता यह है कि रोग अत्याधिक तेजी से पशुओं में फैलता है। रोगी पशुओं में निम्मनलिखित लक्षण पाये जाते है।

- अत्याधिक ज्वर (105^0C)।
- जीभ तथा तलवे पर छालों का उभरना जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते है।
- जीभ तथा खुरों की त्वचा का निकल कर बाहर आ जाना।
- खुरों के बीच में घाव होना जिसकी वजह से पशु लंगड़ा कर चलता है।
- मुख में घावों कि वजह से पशु भोजन लेना तथा जुगाली करना बंद कर देता है और कमजोर हो जाता है ।
- मुख से अत्याधिक लार का टपकना।
- थूथनों पर छालों का उभरना।
- शावकों में अत्याधिक ज्वर आने के पश्चात मृत्यु होना।
- यह सभी लक्षण गो पशओं में आसानी से पहचाने जा सकते है परंतु भेंड़ों तथा बकरियों में इस लक्षणों को पहचानना कठिन होता है। इन सभी लक्षणों की वजह से पशु उत्पाद में भारी गिरावट आती है।

रोकथाम के उपाय

एफ०एम०डी० का उपचार अब तक संभव नहीं हो सका है। इसलिए रोकथाम ही सबसे कारगर नियंत्रण का उपाय है। सभी किसान भाईयों तथा बहनों को अब इस रोग के प्रति जागरूकता दिखाने की आवश्यकता है तभी रोकथाम संभव हो पायेगी। एक झुंड़ या एक गाँव में सभी पशु तभी सुरक्षित रह सकते है जब पूरा गाँव एक साथ मिल कर प्रयास करे।

एफ०एम०डी० की रोकथाम निम्नलिखित सरल बातों को ध्यान रख कर आसानी से किया जा सकता है।

- टीकाकरण इस रोग के विरूद्ध एक कारगर टिका (वैक्सीन) भारत में आसानी से उपलब्ध है। सभी वयस्क पशुओं, जिनकी उम्र ६ माह से अधिक है हर ६ महीने में एक बार अनिवार्य रूप से लगवाना चाहिए। सिर्फ गर्भावस्था के अंतिम तिमाही में इस टिके का प्रयोग नही करना चाहिए। उत्तर भारत, मध्य भारत तथा उत्तरीपूर्वी एवं पूर्वी भारत में जनवरी माह में टिके करने तथा जुलाई में पुनः टिका करने से अधिक से अधिक फायदा हो सकता है। केंन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार इस टिके पर छूट देती है, ताकी कम से कम दामों में किसानों को यह टिका उप्लब्ध कराया जा सके।

- अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम पशु चिकित्सक को संपर्क करें।
- नये जानवरों को झुंड या गाँव में मिश्रत करने से पूर्व उसकी जाँच आवश्यक है। अगर जाँच किसी कारण वश संभव ना हो सके तो इन नए पशुओं को कम से कम चौदह दिनों तक अलग बांध कर रखना चाहिए तथा भोजन एवं अन्य प्रबन्धन भी अलग से ही करने चाहिए।
- पशुओं को पूर्ण आहार देना चाहिए जिससे मिनरल एवं विटामीन की मात्रा पूर्ण रूप से मिलती रहे।
- घावों को साफ़ करें इसके लिए ०.०१ प्रतिशत (एक बाल्टी पानी में एक छुटकी) पोटेश्यिम परमेंग्नेट घोल कर इस्तेमाल कर सकते है।
- स्वस्थ होने तक रोगी पशुओं में ज्वर कम करने तथा एन्टीबाइटिक का इंजेक्शन का इस्तेमाल करें।

बिमारी फैलने की स्थिति में

- अपने निकटतम पशु चिकित्सक को तुरंत संपर्क करें।
- पशु चिकित्सक प्रकोप की सूचना तुरंत अपने वरिष्ठ अधिकारियों को दें।
- सभी रोगी पशुओं को बाकी झुंड से तुरन्त अलग कर देना चाहिए।
- रोगी पशुओं का प्रबंधन अलग से करना चाहिए।
- अगर आस–पास के गाँवों में भी बिमारी फैली है तो स्वस्थ पशओं को बिमारी थमने तक चरने के लिए खुले में ना छोड़े।

उपसंहार

खुरपका मुँहपका रोग दीर्घकाल से पशुओं में होता रहा है। जिससे भारत की अर्थव्यवस्था को तकरीबन बीस हजार करोड़ रूपयों का नुकसान प्रतिवर्ष उठाना पड़ रहा है। इस बिमारी का निदान तभी सम्भव है जब विश्व के सभी देश एकजुट हो कर एफ०एम०डी० उन्मूलन के लिए प्रयास करें। इसी महत्व को समझ कर अब सारे देश प्रयासशील है। भारतवर्ष भी अपने पूरे समर्पण से एफ०एम०डी० रोकथाम तथा उन्मूलन में योगदान कर रहा है। वर्तमान समय में भारत में इस्तेमाल होने वाली वैक्सीन के उत्पादन में सक्ष्म है तथा नियंत्रण हेतु प्रयोग में आने वाली सभी तकनीक अब देश में विकसित कर ली गई है।